Ashish Kumar Thakur
B.A. II, History (H), Paper-IV
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

# इण्डोनेशिया में राष्ट्रवादी आंदोलन

भौगोलिक स्थिति :- इंडोनेशिया लगभग 3,000 द्वीपों का समूह है जो यूरोप को एशिया से तथा एशिया को आस्ट्रेलिया से जोड़ने वाले सामुद्रिक मार्गों पर स्थित है। 1945 के पूर्व इस द्वीप समूह को पूर्वी द्वीप समूह के नाम से जाना जाता है। इसी द्वीप समूह में 4 सबसे बड़े द्वीप है- जावा, सुमात्रा, कालीमंतन तथा सेलीबीज। इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता भी जावा के तट पर स्थित था। इंडोनेशिया की आबादी में मलय जाति की प्रधानता थी। दूसरी बड़ी जातियाँ चीनियों की है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

इंडोनेशिया की सभ्यता बहुत पुरानी है। यहाँ प की उपजाऊ भूमि और खनिज सम्पदा प्राचीन काल से ही लोगो को आकर्षित करती रही है। सर्वप्रथम पुर्तगाली व्यापारी आये उन्होंने व्यापार के साथ यहाँ ईसाई धर्म का भी प्रचार किया। अनेक स्थानों पर अपना अधिपत्य भी स्थापित कर लिया था पुर्तगाली के बाद 16वी शती के अंत में हॉलेण्ड के डच निवासी यहाँ आये। 18वी शती के अंत तक डचों ने भी इंडोनेशिया के बहुत बड़े भाग पर अधिकार कर लिये।

डच शासन के अन्तर्गत जागरण :- डचों के विरुद्ध स्थानीय लोगों के विद्रोह को दबाने के लिए जो धन खर्च हुआ था, उसको पुनः प्राप्त करने के लिए 'कल्चर सिस्टम' लागु किया। इस पद्धति के अन्तर्गत किसानों की अपनी भूमि के एक निश्चित भाग में हालेण्ड के लिए उपयोगी चीज की पैदावार करने और उसी के द्वारा मालगुजारी अदा करने के लिए विवश किया गया। इसके अलावे डच सरकार किसानों को उनकी पैदावार का उचित मूल्य भी नही देती थी। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई।

इंडोनेशिया में रहने वाले उदारवादी डच लोगो ने किसानों की दुर्दशा के विरुद्ध आवाज उठाई। और धीरे-2 आंदोलन ने जोर पकड़ लिया, फलतः 1870 मे Culture system को समाप्त किया गया। किसानों के शोषण का अंत हुआ और एक नए युग का शुरुआत हुआ।

उदारवादी डच लोगो ने जिस नवीन नीति का प्रचार एवं प्रसार किया वह 'नैतिक नीति' के नाम से प्रसिद्ध है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य अपने अधिकार क्षेत्र के लोगो की

Ashish

Scanned with CamScanner

आर्थिक स्थिति को सुधारना था। बहुत से लोगों की मान्यता है कि इस नीति का मूल उद्देश्य डच शासन के विरुद्ध उठने वाले संभावित विद्रोह को समाप्त करना था। इस नीति के अन्तर्गत भूमि का सर्वेक्षण किया गया तथा अलग-अलग क्षेत्रों में उपलब्ध या पाई जाने वाली खनिज सम्पदा का पता लगाया गया। कृषि की उन्नति की दशा में कई कदम उठाया गया। सार्वजनिक स्वास्थ्य की ओर भी विशेष ध्यान दिया गया।

राष्ट्रीय चेतना का उदय :– आधुनिक शिक्षा के प्रसार के परिणामस्वरूप वहाँ के लोगों का पश्चिमी विचारधारा से संपर्क हुआ। इसमें इंडोनेशिया के लोगों ने भी स्वतंत्रता, समानता और प्रजातंत्र आदि का महत्व बढ़ता गया और धीरे-धीरे इसमें उन लोगों में डच शासन के विरुद्ध असंतोष उत्पन्न होने लगी। 20वीं शदी के प्रारम्भ एशिया और अफ्रीका के बहुत से देशों में राष्ट्रीय नवजागरण हुए, जिससे इंडोनेशियाई भी काफी प्रभावित हुए।

अतः सर्वप्रथम 1908 में इंडोनेशिया ने 'बोदी उतोमो' और 1912 में 'सरकेत इस्लाम' नामक संगठन की स्थापना की। इसी समय प्रथम विश्व युद्ध शुरु हुआ। मित्र राष्ट्रों ने स्वतंत्रता एवं प्रजातंत्र की सुरक्षा का नारा दिया। अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन ने भी इंडोनेशिया को भी यह विश्वास दिलाया कि उन्हें स्वतंत्रता मिल जायेगा।

परन्तु युद्ध की समाप्ति के बाद जब उन्हें स्वतंत्रता नहीं मिली तो वे विद्रोही हो उठे। 1927 में सुकर्णो के नेतृत्व में 'इन्डोनेशियाई राष्ट्रवादी दल' की स्थापना की गई। इस दल ने राष्ट्रीय आंदोलन को गति दी।

1917 में विधान मंडल की स्थापना की गई। इस विधान मंडल में दो-तिहाई निर्वाचित सदस्यों एवं एक-तिहाई मनोनीत सदस्यों का प्रावधान रखा गया था। इसके अलावा एक सिविल-सर्विस का संगठन भी किया गया और इंडोनेशिया के लोगों का भी चयन किया जाने लगा।

जापानियों का आधिपत्य :–

द्वितीय विश्व युद्ध के समय जब जर्मनी ने हॉलेण्ड, फ्रांस और बेल्जियम को परास्त कर दिया तो जापान ने इन देशों के दक्षिण-पूर्व एशिया में फैले उपनिवेश को जीतकर अपना प्रभुत्व बढ़ाने का अच्छा अवसर देखा। इंडोनेशिया के बहुत सारे नेता भी जापानी सहयोग से डच शासन से मुक्त होने का विचार करने लगे थे।

Ashish

Scanned with CamScanner